thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 34 4 से 10 सितम्बर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 भा. शु.. 10

स्वार्थ रहित तथा कर्मठता सहित आर्य समाज की सेवा का व्रत लें

-स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा में हुआ नव-प्रविष्ट ब्रह्मचारियों के उपनयन संस्कार का भव्य कार्यक्रम

सार्वदेशिक सभा के नव नियुक्त प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का किया गया भावपूर्ण अभिनन्दन

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा में श्रावणी महोत्सव के अवसर पर चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ तथा नव-प्रविष्ट ब्रह्मचारियों के उपनयन संस्कार का कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। 30 तथा 31 अगस्त तक दो दिन चले इस कार्यक्रम में विशेष यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी द्वारा ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत धारण कराया गया। मुख्य कार्यक्रम 31 अगस्त को समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध समाजसेवी, श्री एच. पी. परिहार ने की तथा मुख्य अतिथि निपमैन फास्टनर इण्डस्ट्रीज के श्री प्रवीण मल्होत्रा रहे। इस अवसर पर श्रीमती प्रियंका मल्होत्रा,, डॉ. डी. के. गर्ग, श्री रवि चोपड़ा आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

सर्व प्रथम सार्वदेशिक सभा का प्रधान नियुक्त किये जाने पर स्वामी आर्यवेश जी का विशेष स्वागत किया गया उन्हें ओम पट पहनाकर तथा अभिनन्दन पत्र भेंट कर पुष्प मालाओं से लाद दिया गया।

आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती गायत्री मीना, मंत्री कैप्टन अशोक गुलाटी, श्री नरेन्द्र सूद कोषाध्यक्ष, श्री प्रवीन आर्य, श्री प्रवीन मल्होत्रा, श्री एच. पी. परिहार सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी जी का सम्मान, सत्कार किया। डॉ. जयेन्द्र कुमार जी ने अभिनन्दन पत्र पढ़कर स्वामी जी का जीवन परिचय आर्यों के समक्ष प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित पदाधिकारियों तथा आर्यजनों का आह्वान किया कि वे आर्य समाज को तेजस्वी बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों को करने के लिए सक्रिय हों। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक सुधार, राष्ट्र निर्माण, मानव निर्माण तथा वेद प्रचार हेतु अर्पित कर दिया लेकिन उनकी जय के उद्घोष की सार्थकता तभी होगी जब हम उनके विचारों, उनके बताये मार्ग ज्ञान व वेद के प्रकाश को घर-घर में पहुंचाये। स्वामी जी ने कहा कि आज हम सबको यह संकल्प लेना है कि भारतीय संस्कृति, सदाचार तथा वेद मत के विषय पर अपने मित्रों अपने मिलने वालों तथा अपने आस-पास के व्यक्तियों से वार्ता करें तथा अन्धविश्वास, कुरीतियों तथा समाज में फैल रहे भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, रिश्वतखोरी आदि महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा करने का संकल्प लें। स्वामी जी ने कहा कि आज चारों तरफ भ्रष्टाचार का बोलबाला है और इसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव हमारी युवा पीढ़ी पर पड़ रहा है। उसके मन में समाज तथा राष्ट्र निर्माण का विचार ही नहीं आता। आज का युवा

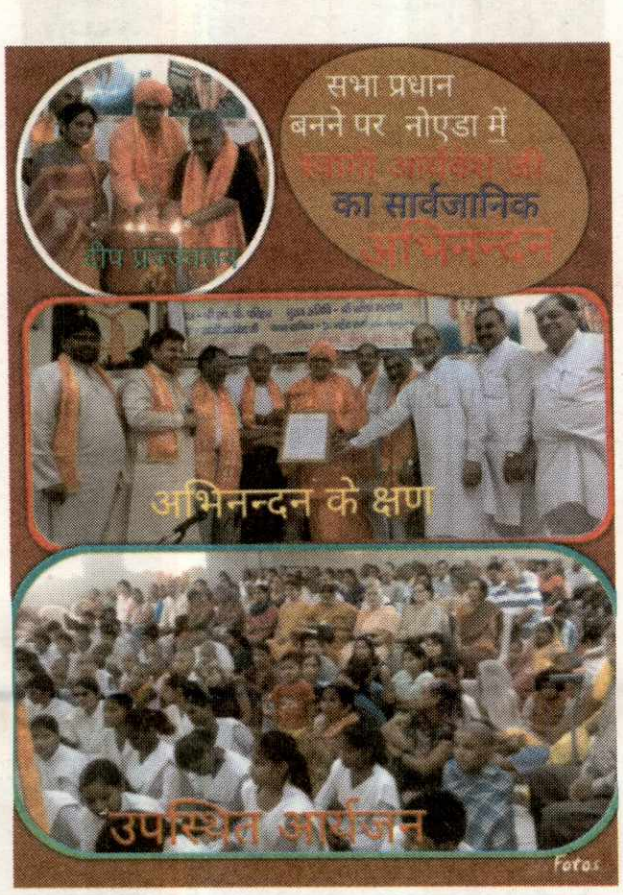

समाज निर्माण के स्थान पर अराजकता फैला रहा है। आज सबसे बड़ी आवश्यकता युवाओं के चरित्र निर्माण की है। आध्यात्मिकता, ज्वलन्त राष्ट्रीय समस्याओं पर चिन्तन, युवा संवाद में वाद-विवाद, नेतृत्व क्षमता बढ़ाने का प्रशिक्षण आर्य समाज के इतिहास तथा उसके सिद्धान्तों का परिचय और वेद गरिमा का ज्ञान कराना कुछ ऐसे कार्यक्रम हैं जिनके माध्यम से हम युवाओं को जोड़ सकते हैं और आर्य समाज में प्रविष्ट करा सकते हैं। हमें इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि समाज में व्याप्त बुराइयों, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, दहेज प्रथा जैसी विनाशकारी प्रवृत्तियों को रोकने के लिए आर्य समाज के कार्यकर्ता अपने व्यवहार तथा आचरण से लोगों को प्रभावित करें तथा उनको साथ लेकर जन जागृति के कार्यक्रम को आगे बढ़ाये। स्वामी जी ने आर्य समाज के इतिहास पर दृष्टि डालते हुए बताया कि पहले आर्य की कथनी और करनी में फर्क नहीं होता था लेकिन आज कथनी और करनी में फर्क आ गया है। जिसके कारण हम अपना यथेष्ठ प्रभाव नहीं जमा पा रहे हैं यह अत्यन्त चिन्ता का विषय है। उन्होंने कहा कि हमें अपने जीवन में परोपकार, ईमानदारी तथा धर्म के मौलिक मूल्यों को अपनाना होगा। स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द द्वारा की गई मनुष्य की परिभाषा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मनुष्य उसी को कहा जा सकता है कि जो मननशील होकर स्वात्मवत अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं कि चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान और गुणवान भी हों तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें। महर्षि दयानन्द की इस परिभाषा को ध्यान में रखते हुए सदैव आर्यों को अन्याय अधर्म तथा समस्त बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाने में सदैव तत्पर रहना चाहिए। स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि आर्यों उठो, जागो और अपने स्वरूप को पहचानों महर्षि ने वेद और यज्ञ की मशाल हमारे हाथों में दी है। वेद और यज्ञ के माध्यम से हम सारी दुनिया को अपने साथ जोड़ सकते हैं आर्य समाजों में हमें कुछ ऐसे कार्यक्रम निर्धारित करने चाहिए जिससे आर्य समाज में प्रतिदिन चहल-पहल रहे तथा स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इस प्रकार हम आर्य समाज को बहुउपयोगी आर्य समाज का स्वरूप प्रदान कर सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि स्वार्थ रहित और कर्मठता सहित आर्य समाज की सेवा का व्रत लें।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री प्रवीण मल्होत्रा ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि मैंने अपने व्यावसायिक जीवन में हमेशा छोटे से छोटे कर्मचारी से लेकर बड़े से बड़े अधिकारी को सम्मान देकर प्रतिष्ठा दी है और उसी के परिणाम स्वरूप हम प्रगति पथ पर बढ़े हैं उन्होंने कहा कि हम सबको उदार बनना चाहिए और अपने जीवन में कठिन परिश्रम करने की आदत डालनी चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री एच. पी. परिहार ने अपने सुलझे हुए विचारों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। इस अवसर पर गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारियों के विद्वतापूर्ण प्रवचनों ने उपस्थित जन समूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. जयेन्द्र कुमार जी ने किया तथा अत्यन्त कुशल संचालन आर्य समाज के कर्मठ मंत्री श्री अशोक गुलाटी ने किया। आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती गायत्री मीना के धन्यवाद के उपरान्त प्रीति भोज के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन आगामी 13 व 14 सितम्बर, 2014 को दिल्ली में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन आगामी 13 व 14 सितम्बर, 2014 को दिल्ली के आर्य समाज क्लब रोड, शालीमॉर बाग पश्चिम में आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधियों को अधिवेशन की विषय सूची (एजेण्डा) पृथक डाक से भेजी जा रही है। सभी प्रतिनिधियों से निवेदन है कि दिल्ली में आयोजित होने वाले सभा के साधारण अधिवेशन में भाग लेने के लिए उपरोक्त निर्धारित तिथि एवं समय पर सम्मेलन स्थल पर पधारकर संगठन को सक्रिय बनाने में सहयोग प्रदान करें।

- प्रो. विट्ठलराव आर्य, मंत्री सार्वदेशिक सभा

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

14 सितम्बर पुण्य तिथि पर विशेष

संस्कृत व्याकरण के तेजस्वी सूर्य
स्वामी विरजानन्द

यह सर्व विदित है कि नदी में भयंकर बाढ़ उतर जाने के पश्चात् नदी एकदम शान्त हो जाती है, किन्तु अपने दोनों कगारों पर न जाने कहां कहां का कूड़ा करकट छोड़ जाती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए मुख्य रूप से तीन बार प्रयास किए गए। प्रथम 1757 में बक्सर का युद्ध, द्वितीय 1857 का महान क्रान्तिपूर्ण युद्ध तथा सन् 1947 में अन्ततः विजय श्री प्राप्त होकर यह देश स्वतन्त्र हुआ। पूर्वोक्त शब्दावली के अनुसार सन् 1857 का महान क्रान्तिकारी युद्ध कतिपय ज्ञात अज्ञात कारणों से असफल हो गया। तब इसके पश्चात् सम्पूर्ण देश में एक मुर्दानगी छा गई। पराजित जाति के लिए इससे बढ़कर लज्जा पूर्ण और अन्य कोई कृत्य नहीं होगा। इस क्रान्ति के ठीक 12 वर्ष पश्चात देश के पश्चिमोत्तर प्रान्त में भयंकर दुर्भिक्ष (अकाल काला बुखार) पड़ गया। देश के सभी भागों में इसकी छाया पड़ी और सहस्रों लोग कस्बों ग्रामों को छोड़कर शहरों की ओर आने लगे। इन पंक्तियों के लेखक के पितामह एवं पितामही इन पीड़ापूर्ण दुर्भिक्ष की बातें सुनाया करते थे, जिसके कारण भयभीत होकर रोमांचित हो जाता था। यह दुर्भिक्ष बाढ़ के पश्चात् किनारों का कूड़ा-करकट ही सिद्ध हुआ। इतिहास के जानकार जानते हैं कि इंग्लैंड में बैठी विक्टोरिया रानी ने दुखी, पीड़ित, शोषित भारतीय जनता को शासन सुधार का एक तोहफा देकर आंसू पोछने का कार्य किया, किन्तु बार-बार आंसू क्यों आते हैं, इसके कारणों से अपना मुख मोड़ लिया। सात समुन्द्र पार बैठी महारानी विक्टोरिया द्वारा गुलामों के साथ जो व्यवहार किया गया, वह माता के वात्सल्य, करुणा, त्याग और शान्ति के गुणों के बिल्कुल विपरीत था। विश्व में गुलाम जातियों के साथ ऐसा ही व्यवहार होता है।

ऐसे भीषण समय में स्वामी विरजानन्द की कुटिया के सम्मुख 34-35 वर्षीय हृष्ट-पुष्ट, 6 फुट 2 इंच लम्बा, गौर वर्ण, चमकता हुआ ललाट धारण किए एक संन्यासी उपस्थित हो गया। यहां आने के पूर्व उक्त युवा संन्यासी मथुरा के रंगेश्वर महादेव मन्दिर में आकर कुछ समय ठहरा। इस युवा संन्यासी के वेश का चित्रण करते हुए प्रसिद्ध बंगाली लेखक बाबू देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय अपने ग्रन्थ में लिखते हैं - ''उस संन्यासी की आयु 34 या 35 वर्ष की होगी। उसके वस्त्र गेरुए थे, कण्ठ (गले) में रुद्राक्ष की माला लहरा रही थी, हाथ में मात्र एक बड़ा सा लोटा अथवा घड़ा था तथा साथ में कुछ पुस्तकें थीं। संन्यासी की आकृति में कुछ विशेषत्व है, उसकी बातचीत और भावभंगिमा में कुछ असाधारणतत्व का परिचय मिलता है। वह कुछ दिन के पश्चात् दण्डी स्वामी विरजानन्द की पाठशाला में आ पहुंचा और उसने यथारीति प्रणिपात् के पश्चात् पढ़ने की इच्छा प्रकट की।'

उपनिषद् में एक कथा आती है, जिसमें विद्या एक विद्वान् ब्राह्मण से कहती है - मुझे किसी अपात्र को मत देना अन्यथा मेरा रूप कालिमामय हो जायेगा। स्वामी विरजानन्द जी अपनी पाठशाला में प्रवेश देते समय छात्र के पात्रापात्र का भलीभांति परीक्षण करते थे। प्रविष्ठ छात्रों से वे न तो कोई शुल्क लेते थे और न समाप्ति पर कोई गुरु दक्षिणा।

हाँ, तो अपने नियम के अनुसार दण्डी संन्यासी ने उपस्थित संन्यासी की मेधाबुद्धि की परीक्षा करने तथा 2-4 बातें करने के पश्चात् अनुभव कर लिया कि यह संन्यासी विद्यार्थी पूर्ण जिज्ञासु है तथा अनन्य असाधारण मेधावी है। कुछ क्षण रुककर स्वामी विरजानन्द ने कहा - 'अनार्ष ग्रन्थों की बातें एकदम भूल जाओ। यदि इन अनार्ष ग्रन्थों की शिक्षा का अंशका भी मन में रहेगा तो आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा बद्धमूल न हो सकेगी। अतः मनुष्य प्रणीत पुस्तकों के उपदेश को एकदम भूल जाओ और इतना ही नहीं, तुम्हारे पास जो मनुष्य प्रणीत ग्रन्थ हैं, उन्हें इसी यमुना में फेंक आओ।' इस आदेश को सुनकर जब दयानन्द वहां से जाने लगे, तब उस उत्कृष्ट संन्यासी ने इस दयानन्द से एक और भी बड़ी महत्वपूर्ण बात कह डाली। चूंकि तुम संन्यासी हो इससे प्रतीत होता है कि तुम्हारे भोजन और निवास के सम्बन्ध में कोई स्थिरता नहीं हो सकती, इसलिए भोजन और आवास की व्यवस्था स्वयं आपको प्राथमिक रूप से करनी होगी। यह युवा संन्यासी भी कोई कम न था, वह तत्काल उन्हें आश्वासित कर वहां से चला गया। परन्तु ..... विरजानन्द पर अपनी छाप छोड़ गया।

यह निर्विवाद सत्य है कि परमात्मा नामक सत्ता पर दृढ़ आस्था रखने वाले सदैव आशावादी एवं उच्च मनोबल के होते हैं। संन्यासी दयानन्द तो इसके साक्षात अवतार थे। उन दिनों मथुरा में ज्योतिषी बाबा अथवा जोशी बाबा का घर सदाशयता और आतिथ्य के कारण बहुत प्रसिद्ध था। इस समय जोशी परिवार में 'अमरलाल' नामक महाशय विद्यमान थे। कहा जाता है कि उनके पूर्वज गुजरात से चलकर यहां आ गए थे। किसी ईश्वरीय प्रेरणा से ही इस युवा संन्यासी से महाशय अमरलाल का साक्षात्कार हो गया। अमरलाल जी भी औदिच्य ब्राह्मण थे। कुछ सौम्य और कुछ साम्य ने परिस्थिति को अनुकूल बना दिया। ब्राह्मणवृत्ति के कारण इस संन्यासी की ओर आकृष्ट हो गए। उस संन्यासी ने अपना मथुरा आने का मन्तव्य

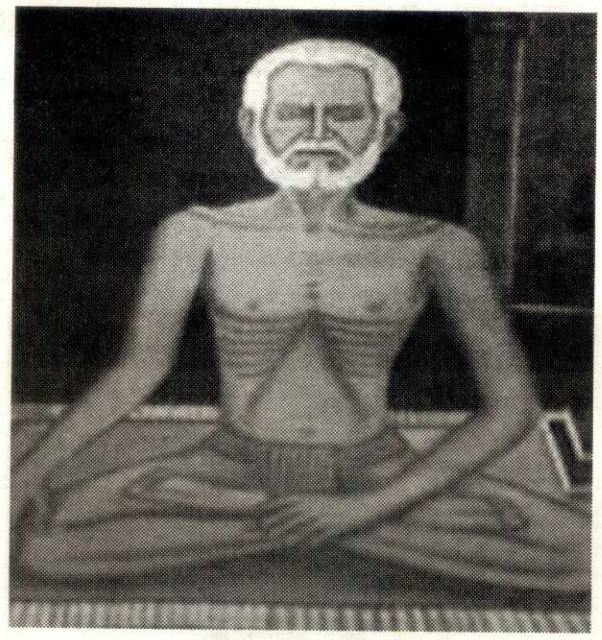

आदि सब कुछ बता दिया। तब पं. अमरलाल जी ने प्रसन्न मुद्रा में अपने ही घर पर नियमित रूप से भोजन का प्रबन्ध कर दिया। फिर भी समस्या आवास की शेष रह गई थी। मथुरा के विश्राम घाट के ऊपर वाले भाग में जो लक्ष्मी नारायण मन्दिर है, उसी के नीचे की मंजिल की कोठरी में इस संन्यासी के रहने की व्यवस्था हुई। देखें विरजानन्द चरित, लेखक स्व. देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय, पृष्ठ 185। इस प्रकार रोटी, कपड़ा और मकान की व्यवस्था के बाद संन्यासी का 'ज्ञान यज्ञ' प्रारम्भ हो गया।

कहते हैं, गुरु विरजानन्द जी कभी-कभी पढ़ाते समय दयानन्द दंडी संन्यासी से तर्क करते हुए बहुमत गहराई तक चले जाया करते थे। दण्डी दयानन्द भी समझने लगे थे कि यह गुरुजी भी असाधारण प्रतिभा के हैं। उन्होंने सर्वप्रथम इन्हें पाणिनी का पाठ पढ़ाना प्रारम्भ किया। वे बिना टीका भाष्यादि की सहायता से ही पढ़ाया करते थे। कहा जाता है कि विरजानन्द की वागिन्द्रय से भी नाना शास्त्रों की नाना व्याख्या अविरल रूप से निकलकर शिष्य मंडली को विस्मित करती थी। दयानन्द यह सब अद्भुत और अदृष्टपूर्ण व्यापार देखकर इस दृष्टिहीन (अंधे) अध्यापक को एक अलौकिक पुरुष स्वीकार करने पर बाध्य हुए और जितने विस्मयादिष्ट हुए उतने ही श्रद्धाभारावनत चित्त होकर उनसे पढ़ने लगे।'

स्वामी विरजानन्द भाष्यों में से महाभाष्य पाणिनीकृत अष्टाध्यायी को सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ स्वीकार करते थे। यही कारण था कि दयानन्द को पाणिनी के साथ महाभाष्य को भी पढ़ाया जाने लगा। पढ़ाते समय कभी गुरु शिष्य में वाग्युद्ध भी हो जाता था। दयानन्द की तर्कपटुता देखकर ही विरजानन्द मन ही मन अति प्रसन्न होते थे। वे कभी दयानन्द को कालजिह्व कुलक्कर कहकर पुकारते थे। स्वामी विरजानन्द के शब्दों में - 'कालजिह्व उसे कहते हैं कि जिसकी जिह्वा असत्य खंडन में काल के समान हो। कुलक्कर उसे कहते हैं जो शास्त्रार्थ के समय खूंटे के समान अविचलित रहकर शत्रुपक्ष को परास्त करें।'

स्व. श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के अनुसार - जैसे पुराकालीय समरशिक्षक या शास्त्राचार्यगण किसी सुनिपुत्र शिष्य को पाकर उसे रणभूमि में दुर्जेय बनाने के लिए ब्रह्मास्त्र के प्रयोग तक की शिक्षा दिया करते थे, इसी प्रकार उपस्थित क्षेत्र में भी जो कुछ सिंचित और संबल विरजानन्द के पास था, वह उस सबकी दयानन्द को शिक्षा देने लगे।

कहा जाता है कि स्वामी विरजानन्द के सानिध्य में दण्डी दयानन्द प्रायः तीन वर्ष ही रहे। कतिपय इतिहासकार इस समय को बढ़ाकर यह कहते हैं कि जब दयानन्द दीक्षा प्राप्त कर वहां से चले तब उनकी आयु 41 वर्ष की थी। दीक्षा के समय दयानन्द के पास कुछ न होने के कारण वे नतमस्तक होकर गुरुजी से बोले - 'मेरे पास कुछ नहीं है, मैं क्या देकर गुरु दक्षिणा का कार्य समाप्त करूँ।' तब विरजानन्द ने वात्सल्यपूर्ण शब्दों में अपने शिष्य से कहा - 'मैं तुमसे एक नए प्रकार की दक्षिणा चाहता हूँ। तुम मेरे सामने प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहोगे, तब तक भारत क्षेत्र में आर्ष ग्रन्थों के प्रचार और वैदिक धर्म के विस्तार में प्राण पर्यन्त भी अर्पण कर दोगे। मैं इस प्रतिज्ञा परिपालन को ही तुमसे दक्षिणा रूप में ग्रहण करूँगा।' इसे सुनकर शिष्य बोला 'तथास्तु।' वहां से विदा होते समय विरजानन्द ने शिष्य के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और विरजानन्द के वयोजीर्ण कंधों से वैदिकधर्म की जय पताका अपने बलिष्ठ कंधों पर लेकर मथुरा से प्रस्थित हो गए।

- पं. मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति
अ/13, सुदामानगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश)-452009

श्री सूरजभान आर्य की स्मृति में शान्ति यज्ञ का आयोजन

सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य आचार्य सन्तराम आर्य के अग्रज स्व. श्री सूरजभान के निधन पर उनके निवास स्थान बल्लभगढ़ में 2 सितम्बर को प्रात: 10 बजे शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वामी विजयवेश जी के ब्रह्मत्व में किये गये विशेष यज्ञ में सस्वर वेदपाठ का कार्य गुरुकुल गदपुरी के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। यजमान के आसन पर उनके बड़े सुपुत्र श्री सुभाष एडवोकेट विराजमान थे। कार्यक्रम का संयोजन आचार्य संतराम जी ने किया। उपस्थित शोकाकुल परिवार, सम्बन्धियों एवं उपस्थित महानुभावों के समक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रवचन के माध्यम से जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि परमात्मा के न्याय के आगे किसी की नहीं चलती प्रकृति का यह नियम है कि जो यहां आया है समय आने पर उसे अवश्य ही जाना होता है। स्वामी जी ने सार्वदेशिक सभा की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोकाकुल परिवार के प्रति सान्त्वना प्रकट की। इस अवसर पर श्री सूरजभान के छोटे भाई श्री वेदपाल, वजीर सिंह, सन्तराम आर्य, प्रकाश सिंह जगवीर सिंह आदि ने उपस्थित आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर विशेष रूप से श्री विरजानन्द, प्रो. श्योताज सिंह, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या, आर्य समाज सेवा सदन बल्लभगढ़ के प्रधान श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, महेन्द्र आर्य एवं नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

मूर्ति पूजा : मूल में भूल

-डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान

...गतांक से आगे

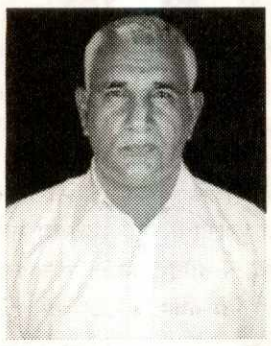

प्रकृति का स्वरूप

ईश्वर और आत्मा के पश्चात् तीसरा अनादि पदार्थ प्रकृति है जो इस सृष्टि का उपादान कारण है। अत्यंत सूक्ष्म परमाणुओं की साम्यवस्था का नाम प्रकृति है। ये परमाणु तीन प्रकार के हैं जो सत्व गुण, रजो गुण और तमो गुण हैं। प्रकृति से महतत्त्व, महतत्त्व से अहंकार, अहंकार से पाँच तन्मात्राएँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और मन, पाँच तन्मात्राओं से पांच स्थूल भूत अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश उत्पन्न होते हैं। प्रकृति के महतत्त्व से लेकर पृथ्वी पर्यन्त तेईस विकार हैं जिनके परस्पर संघात से जगत् बनता है। पाँच स्थूल भूतों के संयोग से, प्रभु की कृपा और व्यवस्था से मनुष्य, पशु-पक्षी आदि प्राणधारी शरीरों की रचना तथा सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, नक्षत्रादि जड़ पदार्थों की रचना होती है। ये परमाणु जड़ हैं, अनादि और अनन्त हैं जिनको जोड़कर ईश्वर सृष्टि की रचना करता है। इन पंच भूतों का हमारी आत्मा पर, संस्कारों पर, हमारे अन्त:करण (मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त) पर प्रभाव पड़ता है जिन्हें धोने के लिए अष्टांग योग-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि का आश्रय लेना पड़ता है। अष्टांग योग न भी अपनाया जाये तो भी एक साधक को, अराधक को, भक्त को कम से कम पांच यमों (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) तथा पांच नियमों (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-शरणागति) का पालन तो अपने जीवन में करना ही पड़ता है जिससे वर्तमान तथा पूर्व जन्म के बुरे संस्कारों का प्रभाव, परिवेश, भोजन, सहवास आदि के कुप्रभावों से अन्त:करण को, आत्मा को स्वच्छ रखा जा सके। ये पाप मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, गंगा स्नान आदि से दूर नहीं हो सकते, सात्विक जीवन जीने से, सद्गुरुओं के सान्निध्य से, सत्संग से दूर होंगे। तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान की साधना क्रिया योग कहलाती है - यह आराधना का प्रशस्त मार्ग माना जाता है। कोई भी गुरु, संत, महात्मा हमें सद्प्रेरणा, उत्साह, सामर्थ्य, मार्गदर्शन दे सकता है लेकिन अपनी यात्रा हमें अपने ही पैरों से पूरी करनी होती है। गुरु न तो हमारे पाप धो सकता है, न मुक्ति दिला सकता है, न कर्मफल से छुटकारा दिला सकता है, न परमात्मा से हमारी सिफारिश करके हमें हमारे पापों की मार से बचा सकता है जैसा कि मुहम्मद साहब और ईसा-मसीह को दावा करते दिखाया गया है। भारतीय दर्शन की कर्मफल व्यवस्था और पुनर्जन्म को ये मसीहा नहीं जानते मानते थे जो कि वैदिक ऋषियों की, योगिराजों की, दार्शनिकों की, वेद मनीषियों की व्यवस्था है अत: उनके दावे विश्वसनीय नहीं भेड़ें बटोरने के टोटके थे। आज भी अनेक गुरु घंटाल ऐसे दावे करते व चेले-चेली मूंढ़ते देखे जा सकते हैं लेकिन उनका स्वयं का हाल क्या रहा रजनीश, बापू आसाराम, आशुतोष महाराज के प्रसंग स्मरण कर जाने जा सकते हैं। अपने को ब्रह्म या अवतार घोषित करने वाले और चमत्कार दिखाने वालों की सम्पत्ति को लेकर शिष्य मण्डली में कितना घमासान मचता है यह भी प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है। भला ब्रह्म का अकूत भौतिक सम्पदा इक्ट्ठा करना कौन सा अध्यात्म है?जो पूरी सृष्टि का मालिक है वह हीरे जवाहरातों की, धन सम्पदा की, कोठी बंगलों की इच्छा रखेगा, चेलियों को वासना तृप्ति का साधन बनायेगा, वशीकरण-अभिचार मारन-उच्चाटन में विश्वास रखेगा, काले धन को सफेद बनाने में प्रयासरत होगा?ये सब बुराइयाँ साकारवाद में, अवतारवाद में, गुरुडम में, चमत्कारों में विश्वास, आस्था, श्रद्धा रखने के स्वाभाविक परिणाम हैं। धार्मिक और आध्यात्मिक जगत् आज इन बुराइयों से अटा पड़ा है जिनमें मूर्तिपूजा सबसे घातक है। मूर्तिपूजा के एक नहीं बीसियों दोष हैं जिनका उल्लेख महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी अमर रचना सत्यार्थ प्रकाश में सविस्तार किया है। पराधीनता का लम्बा दौर जो भारत को झेलना पड़ा उसका एक बड़ा कारण मूर्तिपूजा थी। मूर्तिपूजा ने धर्म व अध्यात्म को बाजारवादी संस्कृति का अंग बना दिया है। मूर्तिपूजा अवैदिक होने से पाखण्ड और अंधविश्वास की जननी है। इसने शार्ट कट रूट तैयार करके साधना, अराधना, सात्विक जीवन शैली के परम्परागत मार्ग अवरुद्ध कर दिये हैं। इसके कारण परमपिता परमात्मा के प्रति लोगों की श्रद्धा, विश्वास, आस्था कम हो रही है। इसके कारण गुरुडम के फलने-फूलने की सम्भावनाएं बढ़ती जा रही हैं। मूर्तिपूजा भीड़-तन्त्र को बढ़ावा दे रही है जिससे सामाजिक स्तर पर, साम्प्रदायिक स्तर पर, आर्थिक स्तर पर, राजनैतिक स्तर पर घातक ध्रुवीकरण हो रहा है। वेद, उपनिषद्, दर्शनों के कारण भारत की जो सांस्कृतिक छवि बनी थी और वह विश्व गुरु के पद पर सम्मानित व प्रतिष्ठित हुआ था उस दिव्य छवि को मूर्तिपूजा धूमिल कर रही है। वैदिक परम्परा के प्रति अविश्वास, उपेक्षा, अवमानना के भाव पैदा कर रही है। ये ऐसे खतरनाक और हानिकारक खतरे हैं जिनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। इस ओर जो भी कदम उठाता है उसे आडम्बरी लोग मिलकर पीछे धकेल देते हैं। कारण हिन्दुओं में साकारवादियों की संख्या अधिक व निराकारवादियों की कम है। अब यह अन्तर और अधिक बढ़ गया है। सुकरात के साथ, गैलीलियो के साथ मंसूर के साथ, सरमद के साथ, दयानन्द के साथ धर्म के इन कथित ठेकेदारों ने जो किया वही कल डॉ. नरेन्द्र डाभोलकर के साथ हुआ और आज स्वामी अग्निवेश के साथ हो रहा है। उन्हें शंकराचार्य स्वरूपानन्द सरस्वती आतंकवादी करार दे रहे हैं और अन्य किसी ने उनके सिर पर दस लाख का ईनाम घोषित किया था। इस देश में वेद की बात कहने वालों की जब यह दुर्दशा होगी तो वेद जीवित कहां रहेंगे?इसी मानसिकता को पालने वालों ने दयानन्द को ईसाइयों का एजेंट कह कर बदनाम किया था। काशी-शास्त्रार्थ में पराजित होने वाली पौराणिक मण्डली ने उनके साथ क्या दुर्व्यवहार किया था, तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में छपे समाचार इसकी साक्षी दे रहे हैं। इस देश का नाम कभी आर्यावर्त था, इसे लोग आज भूल चुके हैं और आर्यत्व को भुला कर हिन्दुत्व के अहंकार में अपने

मूल दर्शन, अध्यात्म, सभ्यता, संस्कृति, धर्म को भुला बैठे हैं। यह आज का सबसे बड़ा सांस्कृतिक संकट है जिसे मूर्तिपूजा ने भयावह बना दिया है। दयानन्द को पढ़कर भारत के बारे में मैक्समूलर ने अपनी मैकालेवादी बद्धमूल धारणा त्यागकर जो भव्य धारणा बनाई थी क्या वह धारणा एक आम भारतीय या एक आम हिन्दू अपना पायेगा?जिस विदेशी षड्यन्त्र के तहत दयानन्द की महिमा को खत्म करने के लिए विवेकानन्द को महिमा मण्डित किया गया क्या उस षड्यन्त्र को सफल बनाने वाले भारतीयों की मानसिकता में कभी बदलाव आयेगा?शायद नहीं, क्योंकि यही लोग मांसभक्षण, मूर्तिपूजा, गुरुडम, तीर्थाटन, अन्धविश्वास, पाखण्ड को बढ़-चढ़कर पोषित कर रहे हैं।

मूर्तिपूजकों की भूल

मूर्तिपूजा : मूल में भूल इस कारण है कि ईश्वर, जीव, प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को मूर्तिपूजक भुला बैठे हैं। धर्म, अध्यात्म, स्तुति, प्रार्थना, उपासना की जो वैदिक परम्परा थी उसे मूर्तिपूजक त्याग बैठे हैं। मूर्तिपूजक शार्ट-कट-रूट अपना रहे हैं जिससे गुरुडम पनप रहा है। मूर्तिपूजक मिथ्या अवधारणाओं को जन्म दे रहे हैं जिनकी पुष्टि वेदों से नहीं होती। आस्था, श्रद्धा और विश्वास की परिभाषा को मूर्तिपूजक बदल रहे हैं। मूर्तिपूजक तर्क के स्थान पर वितण्डा का आश्रय ले रहे हैं जबकि तर्क को भी ऋषि माना गया है। मूर्तिपूजकों का इतिहास, परम्परा, तुलनात्मक अध्ययन, वैज्ञानिक चिन्तन से कोई लेना-देना नहीं है। आज भी दुनिया में करोड़ों लोग निराकारवादी हैं, ये देखने को मूर्तिपूजक तैयार नहीं। मूर्तिपूजकों के अपने ही शास्त्रों में निराकार उपासना के उद्धरण भरे पड़े हैं लेकिन उन्हें पढ़ने-सुनने-गुनने अपनाने को वे तैयार नहीं हैं। लगता है जैसे कुएं में भांग पड़ी है ऐसी वैचारिक अराजकता के चलते सुधार की कम बिगाड़ की अधिक सम्भावना है। इस स्थिति के रहते यदि मूर्तिपूजकों के जगत् गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज स्वामी दयानन्द के दर्शन, चिन्तन, आदर्श पर चलते हुए, वेदों को शिरोधार्य करते हुए मूर्तिपूजा का खण्डन करने वाले, तीर्थाटन को पाखण्ड बताने वाले, अमरनाथ दर्शन, कुम्भ स्नान और कांवड़ यात्रा को अंधविश्वास कहने वाले स्वामी अग्निवेश को आतंकवादी कहते हैं तथा सुदर्शन टी. वी. इस मसले पर उनकी कड़ी भर्त्सना करते हुए यदि यह कहता है कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते तो हम अत्यंत विनम्रता से पूछना चाहते हैं कि यदि स्वामी अग्निवेश इसी योग्य हैं तो कबीर, नानक, संत दादू, संत तुकाराम, दयानन्द को वे किस कोटि में रखेंगे?वैदिक वाङ्मय को और उन पौराणिक शास्त्रों को तथा आदि गुरु शंकराचार्य को किस कोटि में रखेंगे जिन्होंने मूर्तिपूजा के औचित्य पर प्रश्न चिन्ह लगाया हुआ है?यदि स्वामी अग्निवेश आतंकवादी हैं तो वे सनातनी धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में आतंकवाद फैलाते हुए व्यवस्था दी थी कि गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित परिवर्तनशील वैदिक वर्ण व्यवस्था गलत है और जन्म, जाति, व्यवसाय आधारित निरंकुश वर्ण व्यवस्था सही है?वे धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने पशु-बलि और नर-बलि को शास्त्र अनुमोदित घोषित कर इस पवित्र परम्परा को दूषित किया हुआ था?वे धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने नारी व शूद्र से वेद के पढ़ने-पढ़ाने व सुनने-सुनाने का अधिकार छीन कर व्यवस्था दी थी कि यदि वे वेद पढ़ते हैं तो उनकी जिह्वा काट लो और यदि वेद सुनते हैं तो उनके काल में पिघला रांग डाल दो?वे धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने मातृ-शक्ति नारी को नरक का द्वार घोषित किया था?वे धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने समुदाय विशेष के लोगों पर मंदिर प्रवेश का निषेध थोप रखा था, सार्वजनिक कुंओं से उन्हें पानी भरने से रोकते थे, ब्राह्मण से दूरी बनाकर चलनें को बाध्य करते थे?वे धर्माचार्य कौन थे जिन्होंने कथित शास्त्रों के आधार पर विधवा विवाह पर रोक लगा रखी थी, बाल विवाह की अनुमति दे रखी थी और सती प्रथा जैसी नृशंस व क्रूर व्यवस्था को जबरन महिलाओं पर लाद रखा था?यदि ये धर्माचार्य आतंकवादी नहीं थे तो स्वामी अग्निवेश आतंकवादी कैसे हो गये जो उम्र भर इन अवैदिक व्यवस्थाओं को नामशेष कराने के लिए संघर्ष करते रहे हैं?यही धर्माचार्य कथित शास्त्रों के बल पर, जन-बल व धन बल पर टी. वी. चैनलों पर मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, कुम्भ स्नान, कांवड़ यात्रा, फलित ज्योतिष, अवतारवाद, अनेकेश्वरवाद आदि को महिमा-मण्डित व पोषित प्रसारित करते आ रहे हैं। यही लोग चमत्कारों, विलक्षण प्राकृतिक घटनाओं व भविष्यवाणियों का दोहन कर लोगों की आस्था, श्रद्धा, विश्वास को भुना रहे हैं। इस समूचे गोरखधन्धे के विरुद्ध, जिसका कोई वैदिक आधार नहीं है, यदि स्वामी अग्निवेश खड़े हैं तो वे आतंकवादी कैसे हो गये?हम ईश्वर को, अपनी आस्था व श्रद्धा को अपने निहित स्वार्थों के अनुकूल नहीं गढ़ सकते, बल्कि जो ऋषि परम्परा कहती है, योग दर्शन कहता है, वैदिक शास्त्र कहता है, तर्क और विज्ञान जिस पर अर्घ्य चढ़ाता है उसे ही स्वीकारना होगा। मूर्तिपूजा वस्तुत: मृग-तृष्णा है, मरुस्थल में जल का भ्रम प्यासे हिरण में पैदा करती है, भौतिक सुख-सम्पदा के वांछित लोग मूर्तियों के शरणागत होकर किसी चमत्कार की आशा से बंधे होते हैं और यह झूठी आशा प्रचार संसाधनों द्वारा उनमें जगाई जाती है। प्रारब्ध और कर्मफल के अनुसार लाखों में किसी की आस पूरी हो जाती है तो उसे साक्षी रूप में प्रस्तुत कर भ्रम फैलाया जाता है कि अमुक गुरु सिद्ध पुरुष है, ईश्वर का साक्षात् अवतार है, अमुक स्थान या मन्दिर सिद्ध पीठ है, जहाँ सच्ची श्रद्धा से आने वालों की मनोकामना तत्काल पूरी होती है। वास्तविकता यह है कि कोई भी व्यक्ति पूरी श्रद्धा व आस्था से ईश्वर के शरणागत होकर यदि अपने घर में बैठकर भी कोई कामना करेगा तो वह अवश्य पूरी होगी। यह मैं किसी सुनी-सुनाई, लिखी-कही बात पर नहीं बल्कि अपने अनुभव अनुभूति पर आधारित एक ऐसी ही विलक्षण घटना के आधार पर कह रहा हूँ जिसने मेरे जीवन का कांटा ही बदल कर रख दिया था। कामना का पूर्ण होना व्यक्ति के अपने प्रारब्ध, अपने कर्मफल, अपनी श्रद्धा, अपनी आरधना व उपासना तथा अपनी निष्ठा और पवित्र भावना और ईश्वर के प्रति उसकी शरणागति पर निर्भर करता है न कि किसी स्थान विशेष अथवा मूर्ति पर निर्भर करता है। परमात्मा सर्वव्यापी है, घट-घट में रमा हुआ है, हमारी आत्मा में विराजमान है अत: जब भी सच्चे मन से, भाव-विभोर होकर उसके शरणागत होंगे तो वह निराश नहीं करेगा। यदि शिरडी के साईं बाबा के दरबार में सभी के मांगने से मुरादें पूरी होती हैं जैसा कि दावा किया जाता है तो साईं ट्रस्ट औषधालय क्यों खोले बैठा है?रोगियों के रोग मन्नत से ही दूर हो जाने चाहिएँ।

शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ का स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

वर्तमान शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता

- स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ के स्थापना दिवस का द्विदिवसीय कार्यक्रम 23 व 24 अगस्त को समारोह पूर्वक उत्साह पूर्ण वातावरण में गुरुकुल के विशाल प्रांगण में आयोजित किया गया। इस अवसर पर 24 अगस्त को 2 बजे से 5 बजते तक शिक्षा सम्मेलन के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता किसान नेता चौ. सत्यवीर सिंह ने की तथा संयोजन गुरुकुल के आचार्य स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने अत्यन्त कुशलता पूर्वक किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों तथा गणमान्य व्यक्तियों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया तथा स्मृति चिन्ह भेंट स्वरूप प्रदान किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक ब्र. कड़क क्षेत्र के सुमधुर भजनों से किया गया। तत्पश्चात् स्वामी जी ने शिक्षा सम्मेलन के अवसर पर लगभग एक घण्टे तक वर्तमान शिक्षा प्रणाली तथा आर्ष शिक्षा प्रणाली की तुलना करते हुए प्रभावशाली व्याख्यान दिया। रचनात्मक, व्यवहारिक, प्रभावी तथा जीवन निर्माण करने वाली गुरुकुलीय शिक्षा पर बोलते हुए स्वामी जी ने कहा कि वेदारम्भ संस्कार के साथ गुरुकुल में प्रविष्ट होने वाले ब्रह्मचारियों के लिए आचार्य घोषणा करता है कि इन ब्रह्मचारियों को आज से मैं गर्भ में धारण करता हूँ। इसका तात्पर्य है कि बालक का पालन पोषण शिक्षा दीक्षा का दायित्व माता के समान लेने की घोषणा आचार्य करता है। जिस प्रकार गर्भ में स्थित अपने बच्चे का ध्यान हर प्रकार से माता रखती है उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्यों का हर प्रकार से ध्यान रखता है। बच्चे के चतुर्मुखी निर्माण के लिए गुरुकुल में प्रवेश दिलाया जाता था यह एक ऐसी परमपरा थी जिसमें बच्चों का चतुर्दिक विकास होता था। अमीर-गरीब राजा निर्धन सभी ब्रह्मचारियों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये जाते थे। समस्त विद्याओं को प्राप्त करने तथा जीवन को सार्थकता प्रदान करने के लिए व्यक्ति की बुद्धि को प्रखर बनाने की नितान्त आवश्यकता होती है और यह कार्य गुरुकुलीय शिक्षा में किया जाता है। इतना ही नहीं महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारित निर्देशों के अनुसार सभी ब्रह्मचारियों को तुल्य खान-पान तुल्य आसन और तुल्य वस्त्र परिधान देने की परम्परा स्थापित है। महर्षि ने कहा जो गृहस्थ अपने बच्चों को शिक्षा प्रदान न करवाये ऐसे गृहस्थ को दण्डित करने का राज नियम भी होना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि आज एक गलत धारणा लोगों में व्याप्त है कि गुरुकुल में केवल संस्कृत का ही ज्ञान कराया जाता है ऐसा नहीं है उन्होंने कहा कि संस्कृत मुख्य रूप से तथा अन्य विषयों की शिक्षा देने की भी समुचित व्यवस्था गुरुकुलों में है। इस प्रकार गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली उपयोगी तथा प्रभावी होती है।

स्वामी जी ने कहा कि आज हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति पूर्णतया दूषित हो चुकी है आज बालक को शाब्दिक ज्ञान तो दिया जाता है पर उसका परिचय उन उच्चादर्शों के साथ नहीं कराया जाता जो उसे जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अहम भूमिका निभाते हैं। आज की शिक्षा एकाकी तो है ही साथ ही व्यक्ति को संस्कारों से दूर ले जाने वाली भी है। बालक कुछ घण्टे ही गुरुओं के संरक्षण में रहते हैं तथा बाद में स्वतन्त्र वातावरण में विचरते हैं तथा अधिकांश समय वे दिग्भ्रमित करने वाले वातावरण में रहते हैं उनके आचार-विचार में परिवर्तन आ जाता है तथा समाज के दिशा विहीन युवाओं की तरह प्रकट होने लगते हैं। बालक के सर्वांगीण विकास का अभाव हो जाता है तथा केवल आजीविका कमाने का उद्देश्य रह जाता है। जो अधूरा है। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। विचारोत्तेजक विचार रखते हुए स्वामी जी ने आह्वान किया कि शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन कराने के लिए प्रभावी आवाज उठानी चाहिए तथा ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित होनी चाहिए जो बच्चे का सर्वांगीण विकास करे तथा जीवन को सफल बनाये।

गुरुकुल पूठ के उत्सव में आस-पास के क्षेत्र के हजारों व्यक्ति उपस्थित थे। गंगा के किनारे अवस्थित इस गुरुकुल में बड़े पुरुषार्थ के साथ स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने सुविधायें जुटाई है तथा आज यहां सैकड़ों बच्चों का निर्माण हो रहा है।

इस अवसर पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने 2015 में गुरुकुल की रजत जयन्ती स्वामी आर्यवेश जी की उपस्थिति में मनाने की घोषणा की उन्होंने कहा कि रजत जयन्ती समारोह राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जायेगा तथा देश के सभी क्षेत्रों से विद्वान, नेता, संन्यासी तथा आर्यजन भाग लेंगे। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। इस अवसर पर श्री विरजानन्द जी तथा मधुर प्रकाश जी विशेष रूप से कार्यक्रम में उपस्थित थे।

स्वास्थ्य चर्चा

स्वास्थ्य रक्षक : पपीता

पपीता आज से लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व भारत आया, परन्तु आज देशभर में पपीता उपजाया जाता है। गाँवों में घरों के आस-पास पपीता का पौधा लगाया जाता है। इसकी जड़ें गहरी नहीं होती हैं। पपीता की उपज साल में दो बार होती है। पपीता उदर रोगों में बड़ा लाभकारी पाया गया है। विटामिन ए, बी., सी., डी से युक्त एक अच्छा एंटि आक्सीडेंट होने के कारण यह अनेक रोगों से बचाता है। पपीता त्वचा तथा बालों के लिए भी बड़ा उपयोगी होता है। पेपैन नामक एंजाइम भोजन के पचाने के कार्य में प्रभावी होता है। अपच, प्लेग, कब्ज, यकृत आदि रोगों में अधिक लाभकारी होता है। पपीता के पत्तों का रस कैंसररोधी होता है। डेंगू इत्यादि रोगों में प्लेटलेट्स घटने पर पपीता के पत्तों का रस देने से शीघ्र प्लेटलेट्स चमत्कारी ढंग से बढ़ने लगते हैं।

आयुर्वेदिक गुण-दोष - विषनिवारक, दर्द विनाशक गुण है। कब्ज, उलटी-दस्त, अरुचि, पित्ती, गाँठ, प्लेग, हैजा, कफयुक्त खांसी, कृमि रोग, ड्राप्सी, दाद, बवासीर, सूजन, वात एवं कफ संबंधित रोगों में लाभप्रद होता है। कच्चे पपीते का रस आंत्र कृमियों को नष्ट करता है। गर्भवती स्त्री को पपीता का सेवन करना हानिकारक माना गया हैं।

उपयोग

कब्ज में - पपीता एक उत्तम कब्ज निवारक फल है। प्रात: 250 ग्राम पका पपीता तथा भोजन के बाद 150 ग्राम पपीता का नित्य सेवन करना चाहिए।

भूख की कमी एवं अपच में - पके हुए पपीता को छीलकर काट लें तथा नीबू का रस निचोड़कर चुटकीभर सेंधा नमक एवं भुने हुए जीरे को पीसकर थोड़ा सा जीरा पाउडर डालकर पपीते का सेवन करेंगे तो पाचन ठीक तरह से होगा तथा जठराग्नि भी तेज होगी। भूख खुलकर लगेगी, पाचनशक्ति भी बढ़ेगी।

आंव में - पपीता कब्ज को दूर कर ऑव को नष्ट करता है। ऑव के मरीज को सदैव ही तले हुए खाद्य पदार्थों तथा मिर्च-मसालों से परहेज रखना चाहिए तथा नियमित पपीते का सेवन करना चाहिए। भोजन के तुरन्त बाद छाछ पीना चाहिए। छाछ में भुना हुआ जीरा एवं सेंधा नमक या काला नमक भी स्वाद के अनुसार मिला लें।

दंत व्याधियों में - दांत एवं मसूड़ों की तकलीफों से बचने के लिए पपीता का सेवन करना चाहिए। इससे दांतों का दर्द एवं मसूड़ों से खून आना तथा सूजन इत्यादि से छुटकारा मिलता है।

नेत्रों के लिए - नित्य पपीता का सेवन करने से नेत्र ज्योति अच्छी बनी रहती है।

प्लेग होने पर - प्लेग का आक्रमण होने पर पपीता का सेवन करने से 24 घंटे के अंदर संधियों का दर्द दूर होता है। तथा इसमें प्लेग की गाँठ को नरम कर देने की अद्‌भुत क्षमता है।

पपीता के 125 मिली ग्राम बीज को पानी में घिसकर हर दो-दो घंटे में पिलाने से वमन-विरेचन द्वारा शरीर का सारा विष नष्ट हो जाता है। रोगी को लाभ मिलता है।

हैजा में - पपीता के बीज 250 मिली ग्राम मात्रा में गुलाबजल के साथ घिसकर पिलाने से लाभ होता है। दिन में 3 बार दें।

अतिसार में - आधी रत्ती मात्रा में पपीता के बीज पानी के साथ घिसकर पिलाने से अतिसार में लाभ होता है।

विषैले जंतुओं के दंश पर - विषनाशक प्रभाव होने पर पपीता के बीज को घिसकर दंशस्थल पर लेप करने से लाभ होता है।

गांठ पर - शरीर पर किसी भी प्रकार की गांठ पर पपीता के बीजों को घिसकर नित्य लेप करने से लाभ मिलता है। कच्चे पपीता का रस 20 ग्राम नित्य सेवन भी करते रहने से गाँठ समाप्त हो जाती है।

उदर शूल में - आँतों में दर्द होने पर आधी रत्ती पपीता के बीज घिसकर पानी के साथ पिलाने से दर्द दूर हो जाता है।

सुन्नता एवं चर्म विकारों में - खुजली या शरीर के किसी अंग में सुन्नता होने पर तिल के तेल में पपीता के बीज पीसकर, पकाकर छान लें तथा यह सिद्ध तेल रखें। इस तेल से प्रभावित अंगों की मालिश करने से लाभ होता है।

कच्चे पपीते का दूध लगाने से दाद आदि चर्मरोग मिटते हैं।

अस्थि क्षय पर - अस्थियों के क्षरण होने पर संधियों के दर्द, अस्थि विकृति आदि व्याधियाँ जन्म लेती हैं। पपीता का नियमित सेवन अस्थियों को मजबूत बनाता है। इसका नित्य सेवन करने से संधियों की विकृति दूर होती है।

सर्दी, जुकाम में - जिन्हें बार-बार सर्दी-जुकाम, एलर्जी जैसे रोग सताते हैं, उन्हें नित्यप्रति पपीते का सेवन करना चाहिए, इससे इम्युनिटी बढ़ती है, रोग नष्ट होते हैं।

अम्ल पित्त में - पपीता का फल सेवन करने से अम्ल पित्त दूर होता है। जठराग्नि प्रदीप्त करता है। खट्टी डकार आनी बंद हो जाती है। यकृत एवं तिल्ली की वृद्धि भी मिटती है।

पेट के कृमि रोग में - पपीता के बीजों को 1 रत्ती की मात्रा में लेकर पीस लें, एक कप गरम पानी में घोलकर खाली पेट 8-10 दिनों तक सेवन करने से आंत्रकृमि नष्ट हो जाते हैं। कच्चे पपीते का रस भी 50 ग्राम नित्य खाली पेट सेवन करने से कृमि नष्ट हो जाते हैं।

यकृत की कमजोरी में - पपीता को लीवर-टॉनिक कहा गया है। पीलिया इत्यादि यकृत (लीवर) के विकारों में पके हुए पपीता का नियमित सेवन करना चाहिए। पपीता यकृत विकारों को नष्ट कर यकृत की कार्य-प्रणाली को ठीक करता है।

बौनापन में - बच्चों की लंबाई बढ़ाने के लिए पपीता का नियमित सेवन करना चाहिए। इससे पोषक तत्त्वों की पूर्ति होती है।

हृदय रोग में - (1) पेड़ में लगे कच्चे पपीते को चाकू से चीरे लगाने पर पपीते का दूध निकलता है। कच्चे पपीते का दूध 10-12 बूँद बताशे पर टपकाकर प्रात: सेवन करने से हृदय के लिए लाभप्रद होता है। (2) कच्चे पपीते की खीर बनाकर सेवन करना चाहिए। (3) पपीते के 50 ग्राम हरे पत्तों को पानी में उबालकर बनाए काढ़े में सौंफ, इलायची, काली मिर्च तथा काले नमक को पीसकर बनाया पाउडर 3 ग्राम मिलाकर रात को सोते समय सेवन करना चाहिए। उपरोक्त उपचार हृदय रोगों में लाभप्रद है।

कष्टार्त्तव में - जिन महिलाओं को अनियमित या कष्टप्रद मासिक धर्म होता हो उन्हें कच्चे पपीते का रस 100 ग्राम नियमित सेवन कराना चाहिए।

कैंसर में - कच्चे पपीते को सलाद के रूप में सेवन कराना तथा कच्चे पपीते को कसकर दही के साथ रायता सेवन कराना चाहिए।

मूत्र विकारों में - पेशाब में जलन, दर्द, संक्रमण, बहुमूत्र इत्यादि में पके पपीता का सेवन लाभकारी होता है।

चेहरे के सौंदर्य के लिए - (1) कच्चे पपीते को काटकर उसका रस चेहरे की त्वचा पर रगड़ने से चेहरे के दाग, कालिमा, धब्बों, कील-मुंहासों पर रस लगाने से लाभ होता है।

(2) पके पपीते को मसलकर पेस्ट बनाकर चेहरे पर आधा घंटे तक लगाकर रखें तत्पश्चात स्वच्छ पानी से चेहरा धो लें तथा सूती कपड़े से पोंछकर चेहरे पर नारियल या तिल का तेल लगाएँ। यह प्रयोग नियमित करने पर लाभ होता है।

डेंगू ज्वर में - डेंगू ज्वर में रक्त के प्लेटलेट्स घट जाते हैं। 20 ग्राम गिलोय के रस के साथ पपीते के ताजे पत्तों का 20 ग्राम रस निकालकर दिन में 2 बार तीन-चार दिनों तक देने से प्लेटलेट्स तेजी से बढ़ने लगते हैं। गेंहूँ के जवारे का रस एवं ग्वारपाठे (एलोवेरा) का रस भी प्लेटलेट्स बढ़ाने के लिए उपयोगी एवं सहायक होता है।

पित्त की पथरी में - यह पित्ताशय की पथरी के लिए प्रभावी प्रयोग है। पपीते की ताजी जड़ खोदकर लाएं तथा गमले में गाड़ दें ताकि नित्य प्रयोग के लिए ताजी बनी रहे। अब प्रतिदिन 5 ग्राम पपीता की जड़ धोकर साफ कर लें, तत्पश्चात् पानी के साथ पीसकर छान लें तथा एक कप पानी के साथ निराहार प्रात: सेवन करायें। यह प्रयोग 21 दिन तक करें फिर जाँच करा लें।

पथ्य के रूप में मूली, खीरा, गाजर, संतरा, मौसमी का रस पीना लाभदायक होता है। नीबू का रस पानी के साथ प्रात: खाली पेट पीना चाहिए।

thearyasamaj.org

Press Release

In a most challenging and risky operation with utter non-cooperation from the local administration and the police, a special team of the Delhi based Bandhua Mukti Morcha (BMM) (Bonded Labourers Liberation Front) rescued 56 bonded labourers including 31 persons of under 18 years of age from one Chaudhary Brick Kiln at R.S. Pura Nawa shahar of Jammu on 27 August, 2014.

At least 21 of those rescued are women and pathetically 27-year old Janti of Chattisgarh, was forced to make bricks by the owner despite her pleas that she was in the advance stage of pregnancy. Adding insult to the injury she was not taken to the hospital by the owner when she developed labour pain and had to deliver the baby in her hut itself. Not only that she was forced to come back to work within a few days of delivery and

there was no opportunity given to her to feed her new born boy baby. Her husband Jammulal had been a bonded labourer there for the last 25 years.

The BMM, led by Swami Agnivesh, had been communicating by e-email and telephone to the Divisional Commissioner Shant Manu and Jammu Deputy Commissioner Ajit Sahu about the sufferings being undergone by the bonded labourers of Odisha, Uttar Pradesh and Chhattisgarh since third week of July. But there was no response from the local authorities due to the pressure mounted on them by the owners of the Brick Kiln.

A boy called Santosh was bitten by a snake. He had to be admitted to the hospital. He was given only Rs.500 for treatment.

Not only that there were utter flouting of labour laws and payment of minimum wages, the workers were made to toil from as early as 4 a.m. till late in the night. No proper food or water available to them. Pathetically they were forced to work without pay for three months. Their pleas or requests did not work and some of them were threatened to get beaten up if they dared to ask for payment, said 40-year old Pappu of U.P. who was working in the Kiln with his wife.

The rescued persons, with the age ranging from 3 months to 50 years, belonged to Bilaspur, Jangir and Balodha Bazzar districts of Chattisgarh, Badhyun in Uttar Pradesh and Nayagarh district in Odisha.

BMM Executive Director Nirmal Gorana, who led the special team to Jammu from Delhi to rescue the labourers, said he was threatened of facing arrest by Additional Deputy Commissioner Kalyan Singh of Jammu district. The local administration even tried to befool the rescue team by taking back the truck, that was carrying the workers to the Jammu railway station, to the brick kiln itself. However their trick was foiled by BMM. While the Sub-Divisional Magistrate of RS Pura Rajendra Kumar, who held a spot inquiry and spoke to the workers maintained that they were indeed bonded labourers, the Deputy

Commissioner Kalyan Sahu was not ready to accept it.

Swami Agnivesh, president of BMM, said he would further take up the rehabilitation issue of the rescued workers with the respective State governments and ensure that the workers returned to their normal life without any apprehension about their future. "Our fight against the system of keeping bonded labourers will continue whatever be the difficulties. So far BMM has rescued and rehabilitated about 1,76,000 of them".

BMM is planning to take up the issue of bonded labourers to the Supreme Court to ensure that such system of employing persons as slaves is wiped out from the country once for all through further tightening of law.

Mr. Gorana added that the condition of the workers were such they did not have proper clothes and proper place to stay. They had to beg for food from neighbours and could hardly eat once in a day. Children could not go to school as there were no schools nearby. Even children of 10-12 years of age were forced to work in the Kiln.

(Swami Agnivesh)
President – Bandhua Mukti Morcha

महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत सोलह संस्कारों को अपनाकर अपने बच्चों को संस्कारित करने का संकल्प लें

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज दुर्गापुरी विस्तार तथा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में युवा यज्ञोपवीत संस्कार का कार्यक्रम सम्पन्न

आज दिनांक 24 अगस्त (रविवार) को प्रात: 8 बजे से दिल्ली में आर्य समाज दुर्गापुरी विस्तार तथा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में युवा यज्ञोपवीत संस्कार का कार्यक्रम उत्साहपूर्ण वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रीतम सिंह प्रियतम ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य उपस्थित थे। श्री सतीश सत्यम के सुमधुर भजनों से कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर श्री यशोवीर आर्य, श्री रविन्द्र मेहता, श्री जितेन्द्र महाजन विधायक विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन श्री राम कुमार सिंह आर्य ने किया। विशेष यज्ञ केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री महेन्द्र भाई के ब्रह्मत्व में सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए यज्ञोपवीत तथा संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। स्वामी जी ने लोगों का आह्वान किया कि वे अपनी सन्तानों को संस्कारित करने को प्राथमिकता दें तथा ठीक समय पर उनका यज्ञोपवीत संस्कार कराकर उनको विद्यालय में प्रवेश करायें। स्वामी जी ने वर्तमान पीढ़ी के बच्चों तथा युवाओं के लिए संस्कारवान होने पर विशेष बल देते हुए कहा कि वर्तमान वातावरण इतना विशाक्त एवं अश्लीलता से ओतप्रोत हो चुका है कि जिससे अपने बच्चों को बचाना किसी चुनौती से कम नहीं है। इस विशाक्त वातावरण में हमारे युवाओं से सदाचार, नैतिकता, ईमानदारी सेवा एवं आध्यात्मिकता गायब हो रही है परिणाम स्वरूप उनके जीवन में अनुशासनहीनता उच्छृंखलता बढ़ती जा रही है। न तो वे अपने जीवन के प्रति सजग हैं और न राष्ट्र के प्रति। स्वामी जी ने आह्वान किया कि प्रत्येक ग्रहस्थ अपने बच्चों को स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट 16 संस्कारों से संस्कारित करने का दायित्व निभाये। उन्होंने कहा कि यदि माता-पिता अपने बच्चों के प्रति निमार्ण का दायित्व गम्भीरता से निभायेंगे तो फिर वे बच्चे भी अपने विद्यालयों में यथेष्ठ कुशलता विकसित करने में अवश्य सफल होंगे। स्वामी जी ने व्यक्ति के निर्माण में संस्कारों के महत्त्व को बताकर उन्हें जीवन में अपनाने का मार्ग प्रशस्त करते हुए कहा कि यज्ञोपवीत किसी एक जाति का चिन्ह नहीं है बल्कि जो भी व्यक्ति अच्छे गुणों को धारण कर श्रेष्ठ बनना चाहता है वह यज्ञोपवीत धारण कर सकता है। स्वामी जी ने उपस्थित जन समूह को यह संकल्प भी दिलवाया कि वे अपने जीवन में किसी भी प्रकार का नशा नहीं करेंगे तथा नशे के विरुद्ध अपने-अपने क्षेत्र में जन जागृति पैदा करेंगे।

स्वामी जी ने मनुष्य जीवन के समस्त पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे इस जीवन में किये गये कार्य (अच्छे या बुरे) हमारे अगले जीवन का आधार बनते हैं। इन अच्छे-बुरे कार्यों, विचारों एवं व्यवहार के संस्कार चित्त में विद्यमान रहते हैं और इन्हीं संस्कारों के आधार पर मनुष्य का वर्तमान तथा अगला जीवन प्रभावित होता है। अत: आज आवश्यकता है आत्मालोचन कर जीवन बदलने की। प्रात:काल ईश्वर भक्ति दिन में सेवा परोपकार तथा व्यवसाय में सर्व प्रकार की शुचिता लाकर हम अपने जीवन को पवित्र बना सकते हैं और इसी को हम धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। स्वामी जी के सारगर्भित व्याख्यान से प्रबुद्ध वर्ग ने शंका समाधान तथा विशेष प्रेरणा के लिए समय की मांग की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनने पर स्वामी जी का विशेष अभिनन्दन किया गया तथा पुष्प माला पहनाकर सम्मानित किया गया। सम्मान करने वालों में सर्वश्री प्रीतम सिंह जी, सहदेव सिंह जी, नरेन्द्र आर्य मंत्री आर्य समाज, जगपाल सिंह-कोषाध्यक्ष, श्री वेद प्रकाश आर्य, अजय पथिक, राम कुमार सिंह आर्य, श्री हरवीर सिंह, रामपाल सिंह एडवोकेट, रामदेव आर्य, ईश्वर सिंह, शिशुपाल सिंह आदि प्रमुख थे। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

यशस्वी आर्यनेता स्व. प्रो. कैलाशनाथ सिंह जी का जन्म दिवस सम्पन्न

वेदानुकूल मार्ग के परम अनुयायी थे प्रो. कैलाशनाथ सिंह

दिनांक 28 जुलाई, 2014 को आर्य नेता स्व. प्रो. कैलाशनाथ सिंह (पूर्व शिक्षामंत्री, सांसद, नेता विरोधी दल), पूर्वमंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का 76वाँ जन्म दिवस उनके मछोदरी स्थित आवास पर काशी आर्य समाज के प्रधान श्री श्रीनाथ सिंह पटेल जी की अध्यक्षता में मनाया गया, परिवारीजनों के अतिरिक्त आर्यजनों की उपस्थिति के बीच पं. ज्ञान प्रकाश आर्य-अध्यक्ष, काशी आर्य विद्वत परिषद् तथा श्री मोती लाल आर्य के संयुक्त पौरोहित्य में सर्वप्रथम वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें स्वस्तिवाचन तथा शान्तिकरण के मंत्रों का सस्वर पाठ हुआ। प्रो. सिंह के ज्येष्ठ पुत्र डॉ. विशाल सिंह यादव-कोषाध्यक्ष काशी आर्य समाज प्रमुख यजमान रहे।

इस अवसर पर आर्यजनों ने यशस्वी आर्यनेता प्रो. कैलाशनाथ सिंह को अपनी-अपनी भावाञ्जली अर्पित करते हुए उन्हें स्वामी दयानन्द का परम भक्त बतलाया, वह वेदानुकूल मार्ग के परम अनुयायी थे, वैदिक सिद्धान्तों के प्रति उनकी अगाध निष्ठा थी, इसीलिए उन्हें आर्य जगत का सफल संगठन सूत्रधार माना जाता है। आर्यों की आने वाली पीढ़ियों के बीच वह सदैव प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से प्रकाश नारायण शास्त्री, विवेक सिंह एडवोकेट, लालचन्द आर्य, मोतीलाल आर्य, पं. ज्ञान प्रकाश आर्य, विभा आर्या, हेमा आर्या, अभिषेक आर्य, सुरेश यादव आदि उपस्थित रहे।

– श्रीनाथ सिंह पटेल-प्रधान

thearyasamaj.org

हिन्दी दिवस - १४ सितम्बर, १४ बातें

- राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है। राष्ट्र के गौरव का यह तकाजा है कि उसकी अपनी एक राष्ट्रभाषा हो। कोई भी देश अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को अपनी भाषा में ही अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है।
- भारत देश में अनेक उन्नत और समृद्ध भाषाएं हैं किन्तु हिन्दी सबसे अधिक व्यापक क्षेत्र में और सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है।
- हिन्दी केवल हिन्दी भाषियों की ही भाषा नहीं रहीं, वह तो अब भारतीय जनता के हृदय की वाणी बन गई है।
- सर्वोच्च सत्ता प्राप्त भारतीय संसद ने देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को राजभाषा के पद पर आसीन किया है। अब यह अखिल भारत की जनता का निर्णय है।
- संसार में हिन्दी सबसे विशाल जन-समूह की भाषा है।
- प्रान्तों में प्रान्तीय भाषाएं जनता तथा सरकारी कार्य का माध्यम होंगी, लेकिन केन्द्रीय और अन्तर्प्रान्तीय व्यवहार में राष्ट्रभाषा हिन्दी में कार्य होना आवश्यक है।
- प्रादेशिक भाषाएँ तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी दोनों एक-दूसरे की पूरक तथा सहोदरा हैं। एक दूसरे के सहयोग से वे और अधिक समृद्ध होंगी।
- प्रादेशिक हिन्दी और राष्ट्रीय हिन्दी जैसी कोई चीज नहीं। जिसे आज हिन्दी कहते हैं, वही राष्ट्रभाषा है और उत्तरोत्तर विकास करके समृद्ध एवं गौरवशालिनी बनेगी।
- प्रत्येक मनुष्य दो आँखों से देखता है। भारत जैसे विशाल राष्ट्र के निवासी के पास भी दो आँखें चाहिए। ये दो आँखें हैं - 1. अपने प्रान्त की भाषा, 2. सारे देश के लिए परस्पर व्यवहार की भाषा।
- हिन्दी का प्रचार करना राष्ट्रीयता का प्रचार करना है। हिन्दी किसी पर न तो जबरदस्ती लादी जा रही है और न लादी जायेगी, वह तो प्रेम का प्रतीक है।
- कोई भी शब्द, चाहे वह किसी भी भाषा का क्यों न हो, यदि वह जनता में प्रचलित है, तो वह राष्ट्रभाषा हिन्दी का शब्द है। आगे भी हिन्दी विभिन्न भाषाओं से शब्द राशि लेकर समृद्ध बनेगी।
- राष्ट्र की एकता के लिए जैसे एक राष्ट्रभाषा होना आवश्यक हैं, उसी प्रकार एक लिपि का होना भी आवश्यक है। नागरी लिपि में वे सभी गुण मौजूद हैं, जो किसी वैज्ञानिक लिपि मे होने चाहिए। अत: समस्त प्रादेशिक भाषाओं की एक नागरी लिपि हो, यह आवश्यक है।
- अंग्रेजी को बनाए रखना हमारी शान और इज्ज़त के खिलाफ है। वह हमारे देश में रहने वालों के बीच एक दीवार है। इस देश में केवल अंग्रेजी जानने वालों का राज नहीं रह सकता।
- कौन कहता है कि दक्षिण में अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या ज्यादा है?वहाँ अंग्रेजी जानने वालों से पांच गुनी संख्या हिन्दी जानने तथा समझने वालों की है।

'हिन्दी दिवस' के दिन हम प्रतिज्ञा करें कि राष्ट्रभाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि का प्रचार कर राष्ट्रीय भावना को हम सुदृढ़ करेंगे।

- अशोक कुमार शेरी, महासचिव, हिन्दी प्रचार समिति

जनमन की शान - हिन्दी

- शिवकरण दूबे 'वेदराही'

हिन्द देश के अमर सपूतो, गाओ हिन्दी का गुणगान।
हिन्दी से ही राष्ट्र जागेगा, हिन्दी है जनमन की शान।।
सरल सुबोध दिव्य वाणी है, लिपि भी इसकी है अनमोल।
जैसी लिखी पढ़ो वैसे ही, छोटे-छोटे सुन्दर बोल।।
गीत, कहानी, कविता दोहे-ऋजुता है इसकी पहचान।
हिन्द देश के अमर सपूतों, गाओ हिन्दी का गुणगान।।

आओ निज भाषा में बोलें, अन्तर्मन के चिन्तन खोलें।
जनभाषा से जन जीवन में, प्यार भरा अमृत रस घोलें।।
हिन्दी है जन-जन की आशा, छेड़ो इसकी मधुरिम तान।
हिन्द देश के अमर सपूतों, गाओ हिन्दी का गुणगान।।

परभाषा में शान कहां है, संस्कृति का वरदान कहां है?
राष्ट्रप्रेम गुनगान कहां है, ऋषियों का वरदान कहां है?
निज भाषा, निज संस्कृति में, ही हम सबका सच्चा सम्मान।
हिन्द देश के अमर सपूतो, गाओ हिन्दी का गुणगान।।

अपनी भाषा अपना देश, अपनी संस्कृति अपना भेष।
परभाषा में परवशता की, हीन भावना का सन्देश।।
भाषा संस्कृति हीन राष्ट्र का होता नहीं कहीं सम्मान।
हिन्द देश के अमर सपूतो गाओ हिन्दी का गुणगान।।

सूर, कबीर, संत तुलसी, मीरा ने इसमें गान किया।
पंत, प्रसाद और दिनकर ने राष्ट्रप्रेम संचार किया।।
संविधान में भी हिन्दी ने पाया है समुचित स्थान।
हिन्द देश के अमर सपूतों, गाओ हिन्दी का गुनगान।।

- 6-बी, 493, विद्युत विहार, डाकघर, शक्तिनगर, सोनभद्र (उ. प्र.)

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि ''हाँ'' तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, ओंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

योगिराज श्रीकृष्ण सार्वभौम धर्म के सूत्रधार

''हमारा सौभाग्य है कि राम और कृष्ण की संस्कृति हमें विरासत में मिली हुई है। जिसकी रक्षा का संकल्प लेते हुए हमें आतंकवाद मुक्त भारत की संकल्पना साकार करनी होगी, अपने समय के आततायियों का मर्दन योगीराज कृष्ण ने किया था, चिरंजीवी राष्ट्र की रक्षा करना ही श्रीकृष्ण की प्रेरणा है'' उक्त विचार काशी आर्य समाज बुलानाला में आयोजित श्रीकृष्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर सोमवार को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

आर्य विद्वान् पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने बतलाया कि वेदों और गीता-ज्ञान के प्रकाश से ही विश्व का अन्धकार दूर होगा, योगीराज श्रीकृष्ण शाश्वत ज्ञान तथा सार्वभौम धर्म के सूत्रधार है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के पूर्व प्रधान श्री रमाशंकर आर्य ने कहा कि आधुनिक युग में योगीराज श्रीकृष्ण की महानता और उनके चारित्रिक गौरव का बोध हमें स्वामी दयानन्द ने कराया।

आर्य विदुषी डॉ. गायत्री आर्या ने कहा कि गीता में प्रदत्त, ज्ञान के कारण श्रीकृष्ण की प्रासंगिकता कालजयी है।

पूर्व सभासद लालाराम सचदेवा ने बतलाया कि श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र तथा देसना से प्रेरणा ग्रहण कर भारत महानता के शिखर पर पहुँच सकता है।

अध्यक्षीय सम्बोधन में आर्य समाज के प्रधान श्री श्रीनाथ सिंह पटेल ने बतलाया कि श्रीकृष्ण पर आधारित काव्यधारा अत्यन्त समृद्ध है यह अमूल्य निधि है जो श्रद्धालुओं में भक्तिरस का संचार करता है।

समारोह में आर्य समाज के मंत्री प्रकाश नारायण शास्त्री, डॉ. विशाल सिंह, बृजभूषण सिंह, विवेक सिंह, शम्भूनाथ जी, मोतीलाल आर्य, लालचन्द्र आर्य, हरिहर प्रसाद सेठ, रमेश जी आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

श्रीकृष्ण जन्म दिवस समारोह का शुभारम्भ वैदिक प्रार्थना मंत्रों के साथ हुआ, रमेशचन्द आर्य ने योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर सुमधुर गीत प्रस्तुत कर भाव-विभोर कर दिया। अतिथियों का स्वागत डॉ. विशाल सिंह कोषाध्यक्ष ने संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री धन्यवाद प्रकाश बृजभूषण सिंह ने किया, अन्त में शांतिपाठ हुआ। जयघोष सुश्री सत्यनिष्ठा आर्य ने किया।

- प्रकाश नारायण शास्त्री-मंत्री

श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल (देवालय), गोमत (अलीगढ़) का वार्षिकोत्सव

दिनांक 17, 18 व 19 अक्टूबर, 2014 को मनाया जायेगा।

कार्यक्रम

17-18 अक्टूबर प्रात: 8 से 11 बजे तक सामवेद यज्ञ प्रवचन, सायं 3 से 6 बजे तक सामवेद यज्ञ प्रवचन। 19 अक्टूबर को यज्ञ पूर्णाहुति, भजन, प्रवचन प्रात: 8 से 12 बजे तक। सभी धर्माभिलाषी बन्धु बांधव और परिवार सहित यज्ञ में आहुति देने को सादर आमन्त्रित है।

- स्वामी श्रद्धानन्द, अधिष्ठाता

श्रेष्ठ संकल्पों से पूर्ण श्रावणी उपाकर्म, रक्षाबन्धन पर्व मनाया

नागदा (निप्र) - भारतीय संस्कृति में जीवन मुक्ति, बंधन मुक्ति को परम पुरुषार्थ की श्रेणी में रखा है इसलिए जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए व्रतबंध, रक्षा सूत्र आदि को आज के दिन अग्नि की साक्षी में संकल्पपूर्वक धारण किया जाता है। मनुष्य को द्विजत्व में दीक्षित करने तथा उस प्रक्रिया को हर वर्ष रक्षाबंधन के दिन अग्नि के साक्षी में आचार्य द्वारा संकल्पपूर्वक धारण कराया जाता है। मनुष्य को द्विजत्व में दीक्षित करने तथा उस प्रक्रिया को हर वर्ष रक्षा बन्धन के दिन श्रावणी पर्व को मनाने की महान परिपाटी हमारे ऋषियों ने हमारे बीच रखी। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस परिपाटी को पूरी गरिमा के साथ सार्थक करें। श्रावणी पर्व के विभिन्न कर्मकाण्ड हमारे जीवन को ऊँचा उठाने का संकल्प देते हैं। उक्त विचार आर्य समाज नागदा द्वारा आर्य समाज मंदिर पर आयोजित श्रावणी उपाकर्म रक्षाबन्धन पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में आचार्य डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी ने रखे।

आगे जानकारी देते हुए भंवरलाल पांचाल ने बताया कि श्रावणी उपाकर्म का श्रीगणेश उपस्थित आर्यजनों द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। इस अवसर पर आर्य रामसिंह पटेल, अभिभाषक रमेश चन्देल, यशवन्त आर्य, महेश सोनी, प्रधान पूनमचन्द आर्य, मंत्री कमल आर्य, विजय पटेल, राजू आंजना, मुकेश चौधरी, जगदीश पांचाल, जय प्रकाश सोनी, अग्निवेश पाण्डेय, अर्जुन आर्य, रोहित पटेल, प्रकाश आंजना आदि उपस्थित थे। ध्वज वंदना डॉ. सत्यार्थी द्वारा की गई।

इसके पश्चात् ब्रह्मयज्ञ पूर्ण किया गया। इसके उपरान्त यज्ञोपवित परिवर्तन का कार्य सम्पन्न हुआ। देवयज्ञ अग्निहोत्र में यजमान पूनमचन्द आर्य व उपस्थित आर्यजनों ने ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद व यजुर्वेद की ऋचाओं से 111 आहुतियाँ दी गई। यज्ञ समाप्ति के बाद रमेश चन्देल द्वारा सत्यार्थ प्रकाश का पाठ किया गया। महेश सोनी व ओम प्रकाश गंभीरा ने गीतों की प्रस्तुती दी। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कमल आर्य ने किया। आभार जगदीश पांचाल ने माना। शांतिपाठ आर्यन आर्य ने किया। प्रसाद वितरण के साथ श्रावणी उपाकर्म कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- भंवरलाल पांचाल, सूचना प्रमुख

कानपुर नगर के विभिन्न स्थानों पर वेद प्रचार का भव्य कार्यक्रम

कानपुर नगर की समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर नगर के तत्वावधान में दिनांक 3 अगस्त से 10 अगस्त, 2014 तक कानपुर नगर के विभिन्न स्थानों पर वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया जिसमें आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, उपदेशक, आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद से तथा श्री श्याम वीर राघव, भजनोपदेशक, दिल्ली से पधारे। वेद ज्योति स्मारिका का विमोचन 3 अगस्त, 2014 को 128/130 के ब्लाक किदवई नगर में प्रात: 10 बजे किया गया। आर्य समाज प्राचीन ऋषियों के द्वारा स्थापित की हुई परिपाटी को पुन: स्थापित करना चाहता है जिससे कि समाज मे सही बातों का संचार हो सके और अन्धविश्वास मिट सके इसलिए दिनांक 3 अगस्त से 10 अगस्त तक सार्वजनिक स्थलों, विद्यालयों तथा घर-घर जाकर वेद का प्रचार और प्रसार किया गया। बच्चों तथा युवाओं को संस्कारवान बनाने का प्रयास किया गया जिससे वे देश के अच्छे नागरिक बन सकें। सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द की अभूतपूर्व कृति है जो कि वेदों के ज्ञान पर आधारित है। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य उपप्रतिनिधि सभा के जिलाध्यक्ष श्याम प्रकाश शास्त्री तथा संचालन जिलामंत्री विनोद कुमार आर्य ने किया।

- विनोद कुमार आर्य-मंत्री, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर नगर (उ. प्र.)
मो.:-8765193154

आर्य समाज जागृति विहार, मेरठ ने मनाया 25वां स्थापना दिवस

इस वर्ष जागृति विहार आर्य समाज ने अपना 25वां स्थापना दिवस रविवार 3 अगस्त, 2014 को बहुत उत्साह पूर्वक मनाया। कार्यक्रम प्रात: 8 बजे ओ३म् ध्वजारोहण के साथ आरम्भ हुआ। ध्वजारोहण करने वाले श्री डॉ. रामावतार सिंघल, प्रधान आर्य समाज एवं उनकी टीम के सदस्यों को इस भवन के निर्माण का श्रेय जाता है।

देव यज्ञ श्री पं. रणधीर जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। उसके बाद आर्य भजनोपदेशक श्री सत्यदेव जी स्नातक ने समाज में फैली कुरीतियों और पाखण्ड पर प्रहार करते हुए सुमधुर भजनों की गंगा प्रवाहित की। इस बीच उन दानी जनों को सम्मानित किया गया जिन्होंने भवन निर्माण के कार्य में उदारतापूर्वक सहयोग किया है। इसके उपरान्त स्वामी चन्द्रदेव जी ने आर्य शब्द की व्याख्या करते हुए मानव को सुखी जीवन जीने की राह बताते हुए दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया।

मुख्य वक्ता के रूप में आर्य समाज के प्रतिष्ठित लेखक, वक्ता एवं विद्वान श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य आमंत्रित थे। उन्होंने आर्यों एवं आर्य समाज की प्रारम्भिक समय की उच्च स्तरीय प्रतिष्ठा, विश्वसनीयता, आर्थिक और चारित्रिक शुचिता, आर्य विद्वानों के त्याग, तप एवं वैदुष्य का स्मरण कराया। स्वाधीनता संग्राम में योगदान, जाति सेवा के आन्दोलन में सहभागिता, शिक्षा के प्रसार, पाखण्ड-कुरीतियों के खण्डन एवं दुर्गुणों-दुर्व्यसनों के निराकरण में आर्य समाज की महती भूमिका की चर्चा की। वेद मंत्रों के हवाले से आर्य-अनार्य के भेद पर भी प्रकाश डाला। यह भी स्पष्ट किया कि स्वयं को आर्य बनायें बिना हम दूसरों को आर्य नहीं बना सकेंगे। कविरत्न पं. प्रकाश जी की लिखी पंक्तियों के साथ ''फहरायें ध्वजा ओ३म् की संसार में प्रकाश, हो हार असुर दल की, आर्यों की जीत हो।'' उन्होंने अपना वक्तव्य समाप्त किया। विशिष्ट अतिथि डॉ. वेदपाल आर्य जी (पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष जनता वैदिक महाविद्यालय, बड़ौत) ने आर्य समाज के नियमों की व्याख्या करते हुए समाज को एक सूत्र में बांधने की प्रेरणा दी। कार्यक्रमों में श्रोताओं की उपस्थिति उत्साह जनक रही। आयोजन अत्यन्त सफल रहा।

- राम सिंह आर्य

वेद प्रचार अभियान, 2014 का प्रथम चरण सम्पन्न

आर्य समाज, सैक्टर-6, भिलाई (छत्तीसगढ़) के वेद प्रचार अभियान 2014 का प्रथम चरण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर सम्पन्न हुआ। इस आठ दिवसीय पर्व का श्रावणी रक्षाबन्धन को शुभारंभ वैदिक धर्म के राष्ट्रीय प्रचारक मुरादाबाद (उ. प्र.) से पधारे डॉ. महावीर मुमुक्षु द्वारा हुआ। इस दौरान नगर के विभिन्न इलाकों में पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग आयोजित किए गए जिसमें वर्षा के बावजूद बड़ी संख्या में नर-नारियों ने इसका लाभ उठाया।

इस अवसर पर डॉ. महावीर मुमुक्षु जी ने अपने प्रवचन में मुख्य रूप से वेद ज्ञान, आर्य समाज की मान्यताओं पर वर्तमान परिस्थितियों में प्रकाश डालते हुए उन पर आचरण की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि समाज को संगठित करने के लिए आर्य नाम, धार्मिक ग्रन्थ वेद, पूजा के लिए अग्निहोत्र तथा भेदभाव जांत-पांत से रहित संस्था आर्य समाज ही एकमात्र विकल्प है। देश की आजादी, दलितों का उद्धार, नारी शिक्षा जैसे तमाम सामाजिक आंदोलन का नेतृत्व आर्य समाज ने किया है। अब देश की आजादी की सुरक्षा, अखण्डता, चरित्रवान नागरिक निर्माण की चुनौती में भी आर्य समाज अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

इस अवसर पर महिला विद्यालय, नर्सिंग कॉलेज आदि शिक्षण संस्थाओं में बोलते हुए श्री मुमुक्षु जी ने कहा कि वेदों में ब्रह्मचारी और आचार्य शिक्षा के दो बिन्दु हैं, इन दोनों को मिलाने वाली रेखा सदाचार है।

इस अवसर पर पूर्ण विधि-विधान से आर्य पुरोहित श्री उद्धव प्रसाद शास्त्री ने सभी स्थानों पर यज्ञ पूर्ण करवाएं। कार्यक्रम स्थल पर वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर श्रोताओं को उपलब्ध कराया गया। मंत्री श्री रवि आर्य ने बताया कि वेद प्रचार अभियान 2014 का 22 दिवसीय द्वितीय चरण 2 नवम्बर से 23 नवम्बर तक मनाया जायेगा। प्रधान श्री अवनी भूषण पुरंग ने कार्यक्रम की सफलता के लिए धन्यवाद प्रगट किया।

- रवि आर्य-मंत्री, आर्य समाज, सैक्टर-6, भिलाईनगर (छ. ग.)

आर्य समाज रुद्रपुर (उधमसिंह नगर)

श्री सुभाष चन्द्र आर्य	-	प्रधान
डॉ. सुरेश कुमार आर्य	-	मंत्री
श्री वेद प्रकाश ग्रोवर	-	कोषाध्यक्ष

वैदिक साधना आश्रम शिवालय टेहू आगरा

स्वामी रामानन्द आर्य	-	प्रधान
श्री अंकित सिंह सिसौदिया	-	मंत्री
श्री राम प्रसाद आर्य	-	कोषाध्यक्ष

आर्य पुरोहित सभा, मुम्बई

पं. नामदेव आर्य	-	प्रधान
श्री नरेन्द्र शास्त्री	-	मंत्री
श्री विनोद कुमार शास्त्री	-	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना

श्री विजय सरीन	-	प्रधान
श्री अनिल कुमार	-	मंत्री
श्री राजीव गुप्ता	-	कोषाध्यक्ष

theain aryasamaj.org

NDPSo on 5/6 सितम्बर, 2014
प्रकाशन की तिथि : 4 सितम्बर, 2014
वैदिक सार्वदेशिक 4 से 10 सितम्बर 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

अजेय प्राण

वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवाः अजहुर्ये सखायः।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि।।

—ऋ:० ८/९६/७

ऋषिः—तिरश्चीर्द्युतानो वा मारुतः।। देवता—इन्द्रः।। छन्दः—विराट्त्रिष्टुप्।।

विनय—हे मेरे आत्मा! तेरे असली साथी तो प्राण ही हैं। जब तक प्राण तेरे साथी नहीं हो जाते तब तक अन्य देवों का साथ बेकार है, प्रत्युत समय पर धोखा देने वाला है। मैं जब उत्तम ग्रन्थ पढ़ता हूँ, सन्तों की वाणी सुनता हूँ, पवित्र उपदेश श्रवण करता हूँ तब मन में बड़े दिव्य, उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं; आन्तरिक मनन और भावना से मन की अवस्था ऐसी ऊँची हो जाती है कि हृदय में मानो देवसमाज लग जाता है। मैं अपने को बिल्कुल निर्विकार, निष्काम और पवित्र समझने लगता हूँ, परन्तु पाप–प्रलोभन के आते ही यह सब–का–सब उलट जाता है, वृत्रासुर के सम्मुख आने पर इस सब देव–समाज में भग्गी पड़ जाती है, उसकी फुंकार से सब दिव्य विचार क्षण में उड़ जाते हैं, जरा–सी देर में हृदय में महाबली वृत्रासुर का राज्य जम जाता है। उस समय यह जानता हुआ भी कि मैं बुरा कर रहा हूँ, पाप कर रहा हूँ, पाप की ही ओर खिंचा चला जाता हूँ। मनुष्य इस अवस्था से कैसे पार हो?इसका एक ही उपाय है कि मनुष्य प्राणों की समता प्राप्त करे। प्राणों का सम होना ही प्राणों की (मरुतों की) आत्मा के साथ मैत्री होना है। आत्मा के साथ जुड़ने पर, आत्मा के समीप होने पर प्राण सम और शान्त हो जाते हैं। ये सम हुए प्राण कार्य करने के बड़े, एकल साधन बन जाते हैं। प्राण की सम अवस्था में जो विचार होते हैं, वे स्थिर और दृढ़ होते हैं; इस अवस्था में किये गये संकल्प बड़ा विस्तृत प्रभाव रखते हैं। आत्मशक्ति जब प्राणों को आत्मगृहीत करके उन द्वारा प्रकट होती है तो उसके सामने कोई नहीं ठहर सकता, सब वासनाएँ दब जाती हैं, कोई भी पाप–विचार सिर ऊपर नहीं उठा सकता। बड़े–बड़े प्रलोभन, पाप की बड़ी–बड़ी फौजें आत्मा के एक संकल्प के द्वारा दब जाती हैं, समाप्त हो जाती हैं। आत्माग्नि की एक लपट में भस्म हो जाती है, जब वह आत्म–संकल्प सम हुए, सखा बने हुए प्राणों द्वारा प्रकट होता है और जब आत्माग्नि प्राणमाध्यम द्वारा सहस्त्र–गुणित होकर जल उठती हैं। प्राणों की इस मैत्री को, दोस्ती को पाकर आत्मा क्या नहीं कर सकता?प्राण महाबली है। वह जब तक असम रहता है तब तक उसका बल वृत्रासुर के काम आता है, परन्तु जब वह सम हो जाता है तो वह आत्मा का हो जाता है। आत्मा का सखा प्राण अजेय है।

शब्दार्थ—इन्द्र=हे आत्मन्! **विश्वे देवाः**=सब देव, सब दिव्यभाव **ये सखायः**=जो तेरे साथी बनते हैं **वृत्रस्य श्वसथात्**=पापासुर के सांस से, फुंकार से, बल–प्रदर्शन से **ईषमाणाः**=डरकर भागते हुए **त्वा**=तुझे **अजहुः**=छोड़ देते हैं। हे इन्द्र! **ते सख्यम्**=तेरी मैत्री, तेरा साथ **मरुद्भिः**=प्राणों के साथ **अस्तु**=यदि होता है या हो **अथ**=तो तू **इमाः विश्वाः पृतनाः**=पाप की इस सब बड़ी फौज को **जयासि**=जीत लेता है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

श्रावणी महापर्व पर प्रकाशित प्रमाणित जीवन चरित्र

योगेश्वर श्रीकृष्ण

लेखक- स्व. पं. चमूपति एम. ए.
पृष्ठ संख्या-256, मूल्य - 100/- रुपये

पं. चमूपति द्वारा लिखित "योगेश्वर कृष्ण" अनोखा प्रसाद जन साधारण के लिए उपलब्ध है। अप्रतिम विद्वान पं. चमूपति जी ने योगेश्वर कृष्ण का जीवन चरित्र निष्पक्ष एवं प्रमाण सहित लिखा है। यह जीवन चरित्र ज्ञान पिपासु व्यक्तियों के लिए हर प्रकार से पठनीय एवं संग्रहणीय है। यह पुस्तक 23X36 के बड़े साईज पर विलारपुर टी. ए. कागज पर मुद्रित है तथा कम्प्यूटर द्वारा तैयार की गई है। लैमिनेशन कर टाइटल को अत्यन्त आकर्षक बनाया गया है।

जन्माष्टमी से पूर्व अग्रिम आदेश करने पर यह पुस्तक मात्र 50 रुपये में दी जायेगी। अपनी धनराशि "**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**" के नाम "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर शीघ्र भेजें। दूरभाष संख्या-011-23274771, 23260985 पर सम्पर्क कर सकते हैं।
(डाक व्यय तथा पैकिंग खर्च के 25 रुपये अतिरिक्त देने होंगे।)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेदों के पुनः प्रकाशन की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय
वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–ः प्रकाशक ः–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।